प्रसार पुस्तिका संख्या:- DEE/2021/15

गर्भपात- लक्षण एवं बचाव

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

गर्भपात–लक्षण एवं बचाव

गर्भधारण करने के बाद एवं ब्याने के समय से पूर्व गर्भ नश्ट हो जाने को गर्भपात कहते है। गर्भपात के समय प्रायः गर्भ का बच्चा मृत अवस्था में गर्भ से बाहर आ जाता है और नष्ट हो जाता है। यदि गर्भपात शुरू के दो महीनों में होता है तो प्रायः पाता नहीं चल पाता, लेकिन यदि 3–4 महीने के बाद का गर्भ नष्ट होता है तो इसका पता चल जाता है। पालतू पशुओं में गर्भपात होने के कई कारण हैं, इसमें सबसे मुख्य कारण अनेक योनि रोग हैं जैसे– ब्रूसेलोसिस, ट्राईकोमोनिएसिस, विब्रियोसिस तथा अनेक अन्य कीटाणुओं से होने वाले रोग। इसके अलावा अन्य ऐसी बीमारियाँ जिसमें पशु को तेज ज्वर/बुखार हो जाए, पशु अत्यधिक कमजोर होने लगे, किसी विशेष हॉरमोन की पशु मं कमी होने लगे या भोजन में किसी विशेष प्रकार के तत्व की कमी या विशैली चीजों के खाने से भी गर्भपात हो सकता है।

यदि गर्भपात शुरू के दिनों में होता है तो किसी खास प्रकार के लक्षण दिखाई नहीं देते, परन्तु जब पशु में तीन चार माह के बाद गर्भपात होता है तो निम्न लक्षण दिखाई पड़ते हैं।

1. योनिद्वार में सूजन, पशुओं में बेचैनी, परेशानी तथा ब्याने के समय के प्रायः सभी लक्षण।

2. योनिद्वार से रक्त या मवाद युक्त स्त्राव।

3. कुछ समय बाद मृत बच्चे का गर्भपात हो जाना तथा बच्चे का बाहर आ जाना।

4. जेर समय से न निकलना या जेर रूक जाना। गर्भपात होने के बाद भी गर्भाशय से योनिद्वार द्वारा मिश्रित द्रव्य निकलता रहता है, पशु को ज्वर हो सकता है, पशु की भूख कम हो सकती है, वह बेचैन रहता है, बार–बार थोड़ा–थोड़ा गंदा पेशाब करता है। उपरोक्त लक्षणों से यह पता चलता है कि गर्भाशय रोग ग्रस्त हो गया है। ऐसे समय में यदि ठीक इलाज न करवाया जाए तो पशु पुनः गर्म नहीं हो पाता है तथा भविष्य की गर्भधारण क्षमता भी कम हो सकती है। यदि गर्भ ठहर भी जाता है तो पुनः गर्भपात होने की संभावना बनी रहती है। कभी–कभी तो पशु पूर्ण रूप से बांझ भी हो सकती है। पशु में गर्भपात के उपरोक्त लक्षण नजर आने लगें तो गर्भपात को रोकना संभव नहीं होता है। अतः पशु पालकों को ऐसे उपाय करने चाहिए कि गर्भपात होने ही ना पाये। इसके लिए निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. गाभिन पशुओं को हमेशा साफ सुथरे जगह/स्थान में रखें और कीटाणुनाषक घोल से उसकी सफाई करते रहें।

2. बीमार पशुओं को गाभिन पशुओं से अलग रखे।

3. यदि किसी पशु में पहले गर्भपात हो चुका है तो दूसरी बार गर्भधारण के समय उस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

4. 6 माह से ऊपर वाली गाभिन पशु को जहाँ तक संभव हो, चरने के लिए नहीं भेंजे। यदि भेजना जरूरी हो तो उस पर विशेष ध्यान रखें।

5. गाभिन पशु को दौड़ाना नहीं चाहिए तथा लम्बी यात्रा से इन्हें बचाना चाहिए।

6. गाभिन पशुओं की समय–समय पर पशु चिकित्सक से जाँच कराते रहें।

7. यदि गर्भपात हो गया है तो मृत बच्चे को फेंके नहीं बल्कि मृत बच्चे तथा गर्भपात वाले पशु के खून की जाँच करवायें।

8. पशुओं में गर्भपात की संभावना को कम करने के लिए उन्हें कृत्रिम गर्भाधान द्वारा ही गर्भित करायें। क्योंकि बहुत से सांड ऐसे होते है जो प्राकृतिक रूप से गर्भाधान करने पर योनि रोगों को एक–दूसरे जानवर में फैला देते हैं।

9. गर्भपात हो चुके पशु को चार महीने तक गाभिन नहीं करवाना चाहिए। पशु चिकित्सक की जाँच एवं सलाह के बाद ही उसे गाभिन करायें।

10. गर्भपात के बाद भ्रूण (बच्चा) तथा जेर को मिट्टी के नीचे गहराई में दबा देना चाहिए। तथा पशु–बाड़े की कीटनाषक घोल से सफाई करनी चाहिए।

11. यदि गर्भपात के कारण का पता चल गया हो तो पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार अन्य पशुओं को गर्भपात से बचाने के उपाय करने चाहिए।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरण:- अंकेश कुमार एवं पंकज कुमार

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक, प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962, +91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021 Printed Under - SC-PLAN